



# झारखंड पुलिस को हर तरफ से मिल रही है शाबाशी

- गैंगस्टर अमन साव को मार गिरा कर राज्य को आतंक से मुक्त कराया
- लंबे अंतराल के बाद झारखंड पुलिस को मिली इतनी बड़ी कामयाबी
- दूसरे गैंगस्टरों के खिलाफ भी ऐसी सीधी कार्रवाई की है आवश्यकता

झारखंड पुलिस ने लंबे समय के बाद बड़ी कामयाबी हासिल की है। अलग राज्य बनने के बाद से उसे पहली बार चारों तरफ से इतनी शाबाशी मिल रही है, क्योंकि उसने इस राज्य को अमन साव नामक गैंगस्टर के आतंक से मुक्ति दिला दी है। अमन साव के खाले के साथ ही राज्य की कानून-व्यवस्था और अपराध के मामले पर झारखंड पुलिस पर उठ रहे सवाल भी हमेशा के लिए खत्म हो गये हैं। पिछले एक दशक से अमन साव ने पूरे झारखंड में आतंक फैला रखा



अजय शर्मा

बिल्डर उनके निशाने पर आ गये। पुलिस को इनकी गतिविधियों की जानकारी मिलती तो थी, लेकिन वह कोई कार्रवाई नहीं करती थी। ऐसे में आठ और नी चार्च को रंगी और हजारीबाग में ताबड़तोड़ दो घटनाओं को अंजाम देकर गैंगस्टर अमन साव ने झारखंड पुलिस के इकबाल को चुनौती दी। अमन साव के गुर्गे ने रंगी में सरेह एक कोयला कारोबारी बिपिन मिश्र को गोली मार कर घायल कर दिया। इसके आगे ही दिन उसके गुर्गे ने हजारीबाग में एनटीपीसी के डीजीएम कुमार गैरव को गोलियों से भूत डाला। इन दो घटनाओं ने झारखंड पुलिस पर सर्वात्मक निशान लगा दिया। लेकिन 11 चार्च को झारखंड पुलिस ने अमन साव को एक मुठभेड़ में मार गिराया। इसके साथ ही झारखंड को उसके आतंक से मुक्ति मिल गयी।

## झारखंड का सबसे दुर्दाता गैंगस्टर था अमन

अमन साहू कितना बड़ा गैंगस्टर था, इसका अंदर्जा इसी बासे से लगाया जा सकता है कि उसे झारखंड का लॉरेंस बिश्नोई भी कहा जाने लगा। जिसके बाद से पुलिस ने उसे झारखंड के बाद से पुलिस ने वैष्णवी की नीती हुई थी। नाम था अरविंद पांडेय और पद मिला था एसपीएस का। उन दिनों रंगी का जनजीवन शाम सात बजे थम जाया करता था। इलाके में सुरेंद्र बंगली और अनिल शर्मा का आतंक था। अरविंद पांडेय ने रंगी को अपराध मुक्त करने का अधिकारी बना दिया, तो अपराधी इधर-उधर भागा लगा। कई अपराध पुलिस मुठभेड़ में मारे गये, तो बड़े गैंगस्टरों को अपराध चौधरी (अब दिवंगत) जैसे जांबाज आइपीएस अफसरों ने दबोचना शुरू की।







# संपादकीय

## लोकतंत्र के वक्त मिलना चाहिए

प यहां प्राचीन देश नेपाल क्या एक बार फिर किसी बड़ी उथल-पुथल से बुजाने वाला है? यह सबाल इसलिए उठा, क्योंकि रखियां को काठमाडू में नेपाल के पूर्व नेत्रों ज्ञानेत्र के पश्च में बड़ा प्रदर्शन हुआ। न केवल पूर्व राजा के स्वामत में एयरपोर्ट पर हजारों की भीड़ उमड़ी, बल्कि राजशाही की आपसी के नारे भी लगाये गये। इसे राजा समर्थकों के शक्ति प्रदर्शन के रूप में देखा जा रहा है।

पहले से थीं तैयारी: खास बात यह कि इस प्रदर्शन को पूरी तरह आकर्षिक या स्वतंस्कृत नहीं मान जा सकता। पिछले करीब दो महीने से इसकी तैयारी आंदोलन की बाद दिला रहा है। संवेदनानिक प्रवाधनों की वजह से 26 जनवरी 1965 को हिंदी को राजभाषा के तौर पर जिम्मेदारी संभालनी थी, जिसके विरोध में सौएं अनादुर्भावी की अगुआई में पूरी द्रविड़ राजनीति उत्तर आयी थी। तब हिंदी विरोध के मूल केंद्र में तमिल उपराष्ट्रीयता थी। उसके लिए तब वह साक्षित करना आसान था कि उस पर हिंदी थोपी जा रही है। तब आज की तरह सूचना और संचार की सूचनाओं नहीं थी। तब दक्षिण और उत्तर के बीच आज की तरह सहज संचार नहीं था। तब आज की तरह मीडिया का इंटरेनेटी वितान नहीं था। लेकिन आज हालात बदल चुके हैं। लिहाजा इस संदर्भ में स्टालिन के मौजूदा हिंदी विरोध की तह में जाना ज़रूरी हो जाता है।

ओली के खिलाफ नारे: काठमाडू में हुए इस प्रदर्शन में लगाये जाने वाले नारे ज्यादातर तो राजा और राजशाही के समर्थन तक ही समीप रहे, लेकिन एकाक्षर मामलों में मौजूदा

रखियां को काठमाडू में पूर्व राजा ज्ञानेत्र के पश्च में बड़ा प्रदर्शन हुआ। समर्थन में हजारों की भीड़ उमड़ी और राजशाही गापसी के नारे लगे। इस प्रदर्शन को राजनीतिक अस्थिरता और बेपाल ने लोकतंत्र की धैती पर एक संघावित खतरे के रूप में देखा जा रहा है।

रिश्वार को काठमाडू में पूर्व राजा ज्ञानेत्र के पश्च में बड़ा प्रदर्शन हुआ। समर्थन में हजारों की भीड़ उमड़ी और राजशाही गापसी के नारे लगे। इस प्रदर्शन को राजनीतिक अस्थिरता और बेपाल ने लोकतंत्र की धैती पर एक संघावित खतरे के रूप में देखा जा रहा है।

रिश्वार को काठमाडू में पूर्व राजा के प्रति सम्मान करना भर नहीं लगता। 2006 में हुए ऐसे ही प्रदर्शनों के बाद नेपाल के तकालीन राजा ज्ञानेत्र को सत्ता छोड़ी पड़ी थी। इसके दो साल बाद 2008 में नेपाल धर्मनरपेक्ष गणराज्य धोपित किया गया। ऐसे में अगर राजशाही की आपसी और दिनुव्वु को राजधर्म धोपित करने की मांग सड़कों पर हो रही है, तो सफ है कि यह टकराव आगे चलकर गंभीर रूप से सकता है।

राजनीतिक अस्थिरता: इसमें दो राय नहीं कि 2008 में गणराज्य धोपित होने के बाद सेलोकतंत्र की राह पर नेपाल की जागी बाधाओं से भरी रही है। राजनीतिक स्थिरता नहीं कायम की जा सकी। 17 वर्षों की इस अवधि में वहां 13 सरकारें बन चुकी हैं, लेकिन किसी भी देश में लोकतांत्रिक चेतना विकसित होने में वक्त लगता है। सत्ता के लिए राजनीतिक दलों को आपस में झगड़ाना किसी भी लोकतंत्र के लिए स्वामानव बह नहीं माना जा सकता कि लोकतंत्र के अपहरण की स्थिति बनने पर भी वे एक नहीं होंगे।

### अभिमत आजाद सिपाही

...संचार और सूचना क्रांति और तेज आवागमन के घलते भाषायी स्तर पर तमिलनाडु की स्थिति तीन-चार दशक पहले जैसी है। लेकिन उसे समझने और हिंदी में आने वाले सवालों का जवाब देने या प्रतिक्रिया नहीं कर सकते, क्योंकि तमिल संस्कृति और भाषा दुनिया की पुरानी संस्कृतियों में से एक है और उसकी जड़ें बहुत ज्यादा प्रभावित नहीं थीं। तब लगते हैं कि वह तमिल संस्कृति को नुकसान पहुंचायेगी।

असल बात यह है कि तमिलनाडु की राजनीति में पिछली सदी के साठ के दशक से ही स्थानीय द्रविड़ राजनीति का वर्चस्व बना दुआ है। कभी भी डीएमके तो कभी डीएमके जैसी स्थानीय पार्टियां ही नहीं रहती हैं। 2024 के आम चुनावों को छोड़ दें, तो बीजेपी की भी इन्हीं दलों की बैसाखी की आस रही है। हालांकि हाल के दिनों में पूर्व अधिकारी अनन्मलाइ के जरिये हिसाब से तमिल उपराष्ट्रीयता का ही तमिल उपराष्ट्रीयता का वर्चस्व बनाया जाएगा। लेकिन वह राष्ट्रीयता पर हावी नहीं होनी चाहिए। लेकिन यह कड़वा सच है कि तमिल उपराष्ट्रीयता राष्ट्रीय मूल्यों पर हावी रहती रही है। तमिल उपराष्ट्रीयता के ही जयेंद्र द्रविड़ राजनीति तमिलनाडु की सत्ता पर काबिज रही है। लेकिन तमिल संचार और सूचना क्रांति के दौर में अब लंबे समय से संबंधित रहे पूरे राज्य के गुहस्कों में आशा की नई किरण जीर्ही है। यहां तक कि यह राजनीति की आवश्यकता नहीं होगी।

तमिलनाडु की राजनीति को आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन वह राजनीति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन वह राजनीति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

तमिलनाडु के विरोध में जिस तरह स्टालिन ने रोजाना आधारी पर मोर्चा खेल रखा है, वह 1965 में हिंदी को विरोधी आंदोलन की बाद दिला रहा है। संवेदनानिक प्रवाधनों की वजह से 26 जनवरी 1965 को हिंदी को राजभाषा के तौर पर जिम्मेदारी संभालनी थी, जिसके विरोध में सौएं अनादुर्भावी की अगुआई में पूरी द्रविड़ राजनीति उत्तर आयी थी। तब हिंदी विरोध के मूल केंद्र में तमिल उपराष्ट्रीयता थी। उसके लिए तब वह साक्षित करना आसान था कि उस पर हिंदी थोपी खिलाफ की नारे लगाये गये। औली के लिए तब सूचना और संचार की सूचनाओं नहीं थीं। तब दक्षिण और उत्तर के बीच आज की तरह सहज संचार नहीं था। तब आज की तरह मीडिया का इंटरेनेटी वितान नहीं था। लेकिन आज हालात बदल चुके हैं। लिहाजा इस संदर्भ में स्टालिन के मौजूदा हिंदी विरोध की तह में जाना ज़रूरी हो जाता है।

चाहे तमिलनाडु का निवासी हो या फल-फूल भी रहा है। इसलिए हिंदी ही फल-फूल की रहा है। इसलिए हिंदी ही वैसे भी तमिल संस्कृति को इसलिए बहुत ज्यादा प्रभावित नहीं कर सकते, क्योंकि तमिल संस्कृति और भाषा दुनिया की पुरानी संस्कृतियों में से एक है और उसकी जड़ें बहुत गहरी हैं। तमिल लोग अपनी संस्कृति और भाषा से नेह-छोह ही नहीं रखते, उसका शिदात से समाजन भी करते हैं। फिर तमिलनाडु की ऐसी परियां नहीं हैं कि लिहाजी, लालंधर, सूरत, लुधियाना, मुबाइ की आवश्यकता है। तमिल लोग अपनी संस्कृति और भाषा से नेह-छोह ही नहीं रखते, उसकी शिदात से समाजन भी करते हैं। 2024 के आम चुनावों को छोड़ दें, तो बीजेपी की भी इन्हीं दलों की बैसाखी की आस रही है। हालांकि हाल के दिनों में पूर्व अधिकारी अनन्मलाइ के जरिये हिसाब से तमिल उपराष्ट्रीयता का ही तमिल उपराष्ट्रीयता का वर्चस्व बनाया जाएगा। लेकिन वह राष्ट्रीयता पर हावी नहीं होनी चाहिए। लेकिन यह कड़वा सच है कि तमिल उपराष्ट्रीयता राष्ट्रीय मूल्यों पर हावी रहती रही है। तमिल उपराष्ट्रीयता के ही जयेंद्र द्रविड़ राजनीति तमिलनाडु की सत्ता पर काबिज रही है। लेकिन तमिल संचार और सूचना क्रांति के दौर में अब लंबे समय से संबंधित रहे पूरे राज्य के गुहस्कों में आशा की नई किरण जीर्ही है। यहां तक कि यह राजनीति की आवश्यकता नहीं होगी।

तमिलनाडु की राजनीति को आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन वह राजनीति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन वह राजनीति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

तमिलनाडु की राजनीति को आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन वह राजनीति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

तमिलनाडु की राजनीति को आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन वह राजनीति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

तमिलनाडु की राजनीति को आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन वह राजनीति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

तमिलनाडु की राजनीति को आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन वह राजनीति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

तमिलनाडु की राजनीति को आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन वह राजनीति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

तमिलनाडु की राजनीति को आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन वह राजनीति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

तमिलनाडु की राजनीति को आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन वह राजनीति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

तमिलनाडु की राजनीति को आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन वह राजनीति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

तमिलनाडु की राजनीति को आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन वह राजनीति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

तमिलनाडु की राजनीति को आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन वह राजनीति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

तमिलनाडु की राजनीति को आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन वह राजनीति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

तमिलनाडु की राजनीति को आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन वह राजनीति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

तमिलनाडु की राजनीति को आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन वह राजनीति की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

तमिलनाडु की राजनीति को आ









# धनबाद/बोकाटी/बेटमो

## कार्वाई : केस में फंसाने की धमकी देकर युवक से मांगे 10 हजार रुपये गांधीनगर थाना के एएसआई अजय को एसीबी ने रिश्वत लेते किया गिरफ्तार

आजाद सिपाही संचाददाता

बेरमो/धनबाद। केस में फंसाने की धमकी देकर एक युवक से 10 हजार रुपए रिश्वत लेने वाले एएसआई अजय प्रसाद को एंटी क्रांतिकारी व्यापारी (एसीबी) की टीम ने मंगलवार को शाम के गिरफ्तार कर लिया है। अजय प्रसाद बोकारो जिले के बेरमो कोयलाचल अंतर्गत गांधीनगर थाना में पदस्थित है। एसीबी की टीम एएसआई अजय प्रसाद को अपने साथ धनबाद ले गयी है।

जानकारी के मुताबिक



एसीबी की गिरफ्तार में गांधीनगर थाना के एएसआई अजय प्रसाद की फाइल फोटो।

जरीडीह बाजार के ऊपर बाजार में रहने वाले अनुराग गुप्ता एएसआई के सड़े बाजार स्थित आवास में

पैसे देने गये थे। इस दैशन बाहर में एसीबी की टीम निगरानी कर रही थी। जैसे ही अनुराग गुप्ता ने

अजय प्रसाद को ऐसे दिये, एसीबी की टीम ने उन्हें धर दबाया। पूछताछ के बाद कामगी प्रक्रिया थाना के एएसआई ने एक केस में पूरी की गयी और एसीबी की टीम उन्हें धनबाद ले गयी।

गांधीनगर थाना में पलली बार एसीबी की छापामारी से पूरे क्षेत्र में चर्चा हो रही है।

### पीड़ित की शिकायत पर की गयी कार्वाई

जरीडीह बाजार के ऊपर बाजार में एसीबी की टीम निगरानी कर रही थी। जैसे ही अनुराग गुप्ता ने

के पुत्र अनुराग गुप्ता ने एसीबी में शिकायत की थी कि उनसे गांधीनगर थाना के एएसआई ने एक केस में नाम डालने के नाम पर पैसे की मांग की है। सोमवार को दुपकाईह में रहने वाले ईंटखाल अंसारी ने चार नंबर पेट्रोल पंप के पास पैसे के लेन-देन के मामले में मारपींडी की शिकायत दर्ज करवायी थी। इसमें कुरपनिया के दो युवक विशाल और सागर को आरोपी बनाया गया था।

उसी मिलिशिया में अनुराग का भी नाम केस में जोड़ देने की बात एएसआई ने कही थी। इस क्रम में तीन मोबाइल फोन, चार्जर और ईवरबरिंस बारमद हुए हैं। उन्होंने

## सीआइएसएफ ने जब्त किया तीन टन अवैध कोयला

धनसार (आजाद सिपाही)।

बस्ताकोला क्षेत्र के चांदमारी माझी बस्ती में सीआइएसएफ जवानों ने मंगलवार को कोयला चोरी के खिलाफ अधियान चलाया। इस दैशन बाहर में एसीबी की टीम निगरानी कर रही थी। जैसे ही अनुराग गुप्ता ने

कोयला उतारते हैं। इसके बाद बस्ताकोला प्रबंधन को सौंप दिया। बताया जा रहा कि इस मार्ग में हाइवा से कोयला चोरी के खिलाफ अधियान चलाया। इस दैशन बाहर में 30

कोयला चोर हाइवा पर चढ़कर जाता है।

## होली पर्व को लेकर पुलिस लाइन में मॉक ड्रिल

धनबाद (आजाद सिपाही)।

होली त्योहार के मद्देनजर धनबाद के पुलिस लाइन स्थित पुलिस केंद्र में मंगलवार को मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। जिसमें गायक शंकर व्यास, सपन बनजारी, टिकू, महतो, संदेप श्रीवस्तव, सोनू, मलिक, दीनानाथ पासवान, पंकज सिंह, आशीष चौहान, सोनू चौहान, रामप्रवेश दाश, रामबालक पासवान, राजेंद्र पासवान, सुनील पासवान, अमित पासवान, बिक्रम सोनू, कमलेश पासवान और दिलीप होली का त्योहार मनाने का सदेश

दिया। साथ ही रंग-अबूर लगाकर होली खेला और बड़े बुजुंगों का मला पहानकर स्वागत कर उनके पास होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इसके पास गायक शंकर व्यास, सपन बनजारी, टिकू, महतो, संदेप श्रीवस्तव, सोनू, मलिक, दीनानाथ पासवान, पंकज सिंह, आशीष चौहान, सोनू चौहान, रामप्रवेश दाश, रामबालक पासवान, राजेंद्र पासवान, सुनील पासवान, अमित पासवान, बिक्रम सोनू, कमलेश पासवान और दिलीप

होली का त्योहार किया गया। इसमें होली के आयोजन की ओर से शांति समिति की बैठक भी सभी थाने में किया गया है, ताकि यह होली पर्व शांति, भाईचारे और स्वयं माहौल में खुशी खुशी मना जाय।

गया। उन्होंने बताया कि जिला पुलिस की ओर से शांति समिति की बैठक भी सभी थाने में किया गया है, ताकि यह होली पर्व शांति, भाईचारे और स्वयं माहौल में खुशी खुशी मना जाय।

गया है, ताकि यह होली पर्व शांति, भाईचारे और स्वयं माहौल में खुशी खुशी मना जाय।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोसिएशन और एसीबी की बैठक भी हुई।

जिसमें संठन के लिए एसोस

